256 P
886
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1178/10121

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 886

886 No 40

❀ विचार-तरङ्ग ❀

IMPERIAL ... DEPARTMENT
RECEIVED
14 DEC. 1931

886

लेखक व प्रकाशकः—

श्री स्वामी विचारानन्द जी सरस्वती
देहरादून ।

प्रथमवार १००० प्रति] सम्बत् १९८८ वि० [मूल्य =)

अभय प्रेस देहरादून में मुद्रीत

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 886
Date 24.12.71.
GOVT. OF INDIA

891.43
V.G63 Vic

प्रभाती ।

जय गणेश जय गणेश मङ्गल सुख दाता ॥
ऋद्धि सिद्ध चंवर करैं, मूसक बाहन बीचरैं ।
नाम लेत विघ्न टरैं, गौरी जाके माता ॥ जय० ॥
महिमा तव अपरं अपार, सुमिरत मुनि बारबार ॥
गावत गुन वेद चार, पार नाहिं पाता ॥ जय० ॥
लम्बोदर गज वदन लाल, शीश मुकट अति विशाल ।
ठुमक ठुमक चलत चाल, कार्तिकेय भ्राता ॥ जय० ॥
परशु अरु डुमरू त्रिशूल, एक हाथ पद्म शूल ।
पद पद के शोधें भूल, कवि अनन्द पाता ॥ जय० ॥
शंकर सुत आदि देव, हृदय 'ब्रह्म' सुमिर लेव ।
चरनन को सदा सेव, पाप को नशाता ॥ जय० ।

राष्ट्रीय कजली (मिर्ज़ापुरी)

बम् बम् बम् बम् बम् बम भोला,
उर में धरूं तुम्हारा ध्यान ।

नव ज्वानन के हृदय भवन में,
है तुम्हार अस्थान । बम०।
तुम्हें जो पूजें मन चित लगाकर,
खुदी पुजैं राम समान । बम० ।
भक्त तुम्हार सिंह सम गरजैं,
सह सह कष्ट महान । बम० ।
अर्विन्द सदृश योगी जन भी,
धरैं तुम्हारा ध्यान । बम० ।
तुम्हरे नाम कों सुन शत्रु गण,
भागैं लै लै प्रान ।। बम० ।
मित्र मण्डली हर्ष मनावैं,
दय दय दय वलिदान । बम० ।
स्वतन्त्रता की आश हमारी,
पूर्ण करो भगवान । बम०।
तुम्हारी कृपा दृष्टी से स्वामी,
'ब्रह्म' पद लहैं किसान।बम०।
बम बम् बम् बम् बम् बम् भोला,
उरमें धरूं तुम्हारा ध्यान ॥

लावनी ।

जो शंकर शंकर जपै सदा मन माहीं ।
ओ शिव का रूप होजाय ये संशय नाहीं ॥ टेक ॥
पुरुषार्थ में सब कुछ है जो करे तो ओ फल पावेगा ।
पुरुषार्थ हीन मनुष्य पशु-नीच योनी में जावेगा ॥
तज आलस्य जो करै यत्न तो अवश्य पार हो जावेगा ।
गुरु के मन्त्र प्रतीत करै तो कभी न धोखा खावेगा ॥
जो सत्य प्रतिज्ञा से करे भजन तो ।
आवा गमन होवे नहीं ॥ जो शंकर० ॥
जो ब्रह्मचर्य को पाले अमित बल पावे ।
अरु काम क्रोध को जीते तो बीर कहावे ॥
जो मन को पकड़ आत्म के पास बिठावे ।
ओ तीन लोक में अपनी ध्वजा उड़ावे ॥
सब रहें वा के अनुकूल दुर्लभ कछु नाहीं ॥ जो शंकर० ॥
हो दोष रहित सब विद्यायुक्त सन्यासी ।
जो तजै भोग साधे जोग अभ्यासी ॥
वह अपने आप में देखे सदा अविनाशी ।
मिट जांय सकल सन्ताप छूटे यम-फांसी ॥
मिल जाय ज्योति में ज्योति जन्म ले नाहीं ॥ जो शंकर०
ये स्वप्नवन्त संसार राग का दल दल ।
जो फंसा इसमें वह रोवे हाथको मल मल ॥

जो चाहे निकलना छोड़ दे सब छल बल ।
भज 'विचारानन्द' तू जिसने पिया है हलाहल ॥
शिव कृपा करें तो मुक्ति मिले छिन मांहीं ॥ जो शंकर० ॥

सवैया ।

ठुमरि औ टप्पा को घोकत है नित,
शंकर के गुण को नहिं गावे ।
किस्सा औ उपन्यास पढ़ै खूब,
श्रुति स्मृति से मुह बिचकावे ॥
देश की सेवा को त्याग के मूरख,
रण्डिन से नेह औ प्रेम लगावे ।
'विचारानन्द' कहैं बिन विचार किये,
सत संग बिना सत मार्ग न पावे ॥ १॥

सवैया ।

देश विदेश अनेक फिरै,
विन राम कहै नहिं मुक्ति को पावे ।
कूप तलाव नहाये सदा,
बिन गंग नहाये न पाप नशावें ॥
व्रत आचार औ दान करे,
विन दाया नहिं फल एको के पावे ।
'विचारानन्द' कहैं विन विचार किये,
सत संग बिना सद्‌ मार्ग न पावे ॥ २ ॥

सवैया ।

दर्पण उठाय लखै मुख को,
नित वस्त्र औ भूषण से अंग सजावै ।
मान गुमान से शान करै,
मग जात अनेकन नारि रिझावै ॥
ढोंग पाखण्ड से द्रव्य हरै,
पर दारा तकै औ पण्डित कहावै ।
'बिचारानन्द' कहैं विन बिचार किये,
सत संग बिना सत मार्ग न पावै ॥३॥

सवैया ।

वेश्या के नृत्य करावत मूरख,
खात है माँस औ श्रेष्ठ कहावै ।
सिगरेट औ बीड़ि तमाखु पिये,
मद पान करै निज धर्म नसावै ॥
राग औ रोष में भूला फिरै,
शिव पूजन त्याग कुदेव मनावै ।
'बिचारानन्द' कहैं विन विचार किये,
सत संग बिना सत् मार्ग न पावै ॥४॥

सवैया ।

वेद औ शास्त्र पढै नित वासर,
बैठि सिंहासन पर ज्ञान बतावै ।
तत्व कि बात छिपावत है,
अरु श्रोतन के चित्त को भरमावै ॥
जो धन पावत है जजमान से,
जन्म जनेऊ में, नाच करावै ।

'विचारानन्द' कहैं बिन विचार किये,
सत संग बिना सत् मार्ग न पावे ॥५॥

सवैया ।

वेद विचार को त्याग के प्यारे,
अब यन्दु से हिन्दू कहावत हो ।
दास बने परदेशिन के,
पितु मातु के नाम डुबावत हो ॥
ताक रहे मुख दूसर के,
व्यशनी बन वेष दिखावत हो ।
'विचारानन्द कहैं धिक् है बगुला-
तुम, मिथ्या सफेदी दिखावत हो ॥६॥

सवैया ।

जिन मात पिता नहीं सेवा किये ।
गुरुदेवन को नहीं शीश झुकाये ॥
धर्म गवांय अधर्म गहैं ।
परदेशी विधर्मिन के संग खाये ॥
सब धार्मिक चिन्ह तजी तन से ।
मन से श्री कृष्ण के नाम भुलाये ॥
'ब्रह्म' कहैं ब्रह्म ज्ञान बिना ।
वह श्वान समान फिरैं ठुकराये ॥

सवैया ।

शिव को न पाये, सुरसरि न नहाये ।
जन्म योंहीं बिताये, न लिखाये नाम दानी में ॥१॥
ज्ञान को न ध्याये, द्वेष देश में फैलाये ।
नाम बड़ों के डुबाये, मन लाये पाप कहानी में ॥२॥
द्रव्य लाखों कमाये, विद्यालय न बनाये ।
मांस मदिरा भी खाये, रन्डी नचाये जवानी में ॥३॥
रे रे अभिमानी, तुझ से वसुधा गरु आनी ।
सुन 'विचारानन्द' की बानी, डूबमर उल्लु सारे चुल्लू भर पानी में ॥४॥

———

भजन

मनुवा क्यों तू भयो उदास ॥
बिष्णु रूप सदा है तेरा, शिव तो है तू खास ।
माया तज भज अपने आपको, कर सांचा बिश्वास ॥
मनुवा० ॥
हृदय में नित बसत चन्द्रमा, चक्षु सूर्य प्रकाश ।
इड़ा गंगा पिङ्गला यमुना, चढ़ा सुषुम्ना में श्वास ॥
मनुवा० ॥
शुद्ध सच्चिदा नन्द आनन्द, ले छोड़ पराई आस ।
नहिं जन्मा नहिं मरेगा, प्यारे फिर क्यों होत निरास ॥
मनुवा० ॥

'विचारानन्द' संशय को त्यागके, सदा सेव सन्यास ।
जाके फिक्र में भ्रमत, निश दिन सो है तेरे पास ॥
मनुवा० ॥

गङ्गा स्तुति

गङ्गे तेरी लहर आनन्द सुखदाई ॥
शिव की प्रिय जगत की जननि,
सुर नर मुनि सब करत बड़ाई ॥ गङ्गे
वेदध्वनि कर पर्वत फोड़ के,
पवित्र करन ब्रह्म लोक से आई ॥
चित्रगुप्त चिन्तित ह्वै बैठे,
यम के भी मुख पर उदासी छाई ॥ गङ्गे ॥
विचारानन्द विष्णु पद पावै,
जो एक बार गंगा नाहई ॥ गङ्गे ॥

भजन दादरा

शिव रूप निरख प्यारे बार बार ॥ टेक ॥
गौराङ्ग गौरी अर्धाङ्ग संग ।
जटा से प्रगटी गङ्गधार ॥ शिव० ॥
अर्ध चन्द्र तन भस्म भुजङ्ग अङ्ग ।
गले में सोहै मुण्ड हार ॥ शिव० ॥
कर त्रिशूल डमरू व्याघाम्बर ।
नन्दि पर भोला सवार ॥ शिव ०॥

'बिचारानन्द' दर्शन के लोभ से।
अलख जगावे द्वार द्वार॥ शिव ०॥

भजन

शिव सुमिरन करले यार,
बहार जिन्दगी की बीती जाती ॥ टेक ॥
बाले पन तो खेल गंवायो,
ज्वान भये नहिं हरि गुन गायो,
बृद्ध भये तन कांपन लागे,
कफ से भर गई छाती ॥ शिव ०॥
अर्थ खर्व लों द्रव्य तुम्हारे,
हित कुटम्ब बन्धु परचारे,
ये कोऊ तुम्हारे संग न जै हैं,
जब यम की आय हैं पाती ॥ शिव ०॥
नहीं सत संग कियो सन्तन के,
नहिं कछु दोष तजे तु मन के,
मोह निशा में सोय २ तुम,
बन गये आत्म घाती ॥ शिव ०॥
राग द्वेष संसार के झंझट,
इन्हैं त्याग शंकर २ रट,
दुःख सागर से पार होन हित,
यहि युक्ति मुझे आती ॥ शिव ०॥

औ भव सागर चहैं उतरना,
विचारानन्द का मान तू कहना,
छोड़ कपट जंजाल जगत के,
भजन करो दिन राती ॥ शिव०॥

भजन दादरा

शंकर बिन कौन निहाल करैं ॥ टेक ॥
जो ध्यावे अरु ध्यान लगावे,
निर्भय होय यमराज डरैं ॥ शंकर०॥
छन में राव रंक कर डारे,
कोटि रंक को राव करैं ॥ शंकर०॥
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष दें,
जीवों के उद्धार करैं ॥ शंकर०॥
विष्णु बिरंची अन्त नहिं पावैं,
शेष शारदा ध्यान धरैं ॥ शंकर०॥
पल में करैं ब्रह्माण्ड की रचना,
छन भर में संहार करैं ॥ शंकर०॥
विचारानन्द वह शिव है जानैं,
जो षट् अक्षर का जाप करैं ॥ शंकर०॥

बन में।

मर्यादा के पालन को, धर्म के उबारन को।
भूमि भार टारन को, ईश आये तन में ॥१॥
मुनि मख कारन को, दुष्ट संहारन को,
अहिल्या के तारन को, चले शोच मन में ॥ २॥
धनुष विदारन को, जनक शोक हारन को,
सीय जय-मालन को, धारन कियो तन में।
पिता प्रण पालन को, भक्तन मन हारन को,
रावण के मारन को, राम गये वन में ॥

न्यारे हैं।

सत के वर्ताव से, नीति के न्याव से;
सरल स्वभाव से; प्रभाव वो डारे हैं ॥ १ ॥
अहिंसा कटार से, मारते हैं प्यार से;
लड़ते सरकार से, सर्दार हमारे हैं ॥२॥
पुलिस की मार से, बच्चों की चिंघाड़ से;
कष्ट कारागार से, मौनव्रत धारे हैं ॥३॥

चरखे के तार से, खद्दर प्रचार से,
सारे संसार से, गान्धी जी न्यारे हैं ॥४॥

---o---

न्यारे हैं।

न्याय प्रियता से, दान शीलता से;
धर्म बीरता से, वञ्चित ये सारे हैं ॥१॥
ईश की इच्छा से, ईसा की शिक्षा से,
सत्य की परीक्षा से, कोरे बेचारे हैं ॥२॥
मनुष्य स्वभाव से, सब के वर्ताव से;
प्रत्यक्ष दिखाव से, हृदय के कारे हैं ॥३॥
मेरे अनुमान से, ये हैं बेईमान से;
सारे जहान से श्वेताङ्ग न्यारे हैं ॥४॥

ईजाद करते हैं।

जब आये थे ख़बरें क्या थी,
ये ऐसे हैं छिपे रुस्तम।

हुकूमत के बहाने अब,
हमें बरबाद करते हैं ॥
वह खाते हैं डबल रोटी,
वो माखन छीन कर हम से।
इधर हम रूखी सूखी पर,
दिल अपना शाद करते हैं ॥
तसल्ली है नहीं उनको,
सरापा लूट लेने पर।
हमारे क़त्ल करने का,
वह अब इरशाद करते हैं ॥
बिठा कर हमको मक़तल में,
लिया ख़ंजर है कातिल ने।
झुकाये हम हैं गर्दन,
और ख़ुदा को याद करते हैं ॥
न मारा जान से कातिल
न छोड़ा उठने के काबिल,
पड़े हम मुर्ग़ बिस्मिल की—
तरह फरियाद करते हैं ॥

करम की आड़ में क़ातिल,
जफ़ा करते हैं दुनियां में।
सितमगर और इक तर्ज़,
सितम ईजाद करते हैं।

कजली।

रिपब्लिक होगी यहां पर जारी,
गवर्मेन्ट जाने वाली है।
सारे भूमि पर किसानी सचा,
छाने वाली है॥ रिप०
अंग्रेज़ों की क्रूर नीति
शरमाने वाली है। रिप०
नौकर शाही की शीघ्र तबाही
आने वाली है॥ रिप०
अपने दुष्ट कर्मों के पुलिस,
फल पाने वाली है। रिप०
गोल मेज़ की गोल बात,
टरकाने वाली है। रिप०

दुष्ट गोरन कोकाली मैया,
खाने वाली है। रिप०

नव ज्वानन की कुर्बानी रंग,
लाने वाली है। रिप०

लाल ध्वजा सब के घर घर,
फहराने वाली है। रिप०

भारत माता 'ब्रह्म' आनन्द,
मनाने वाली है ॥

रिब्लिक होगी यहां पर जारी,
गवर्मेन्ट जाने वाली है।

कवित्त—कृष्ण जन्माष्टमी पर।

अष्टमी को तिथि ख़ास, भादों का था वह मास,
जिस दिन भगवान् कृष्ण भारत में आये।
जेल में जन्म लियो, जनिन जनक मुक्त कियो,
नन्द घर पायन कर आनन्द वर्षाये।

पूतना के प्राण हरे, कंस को विध्वंस करे,
और असुरन संघार सुरन को बचाये।
अर्जुन का रथ हंकाय, गीता अमृत पिलाय,
महाभारत रचाय, पांडों को जिताये ॥
ग्वाल बाल संग साथ, वंशी को बजाय नाथ,
वन वन में घूम २ गौवन चराये ॥
कर कर के बहस को, रहस्य के रहस को,
थक थक जोगी जन गये अन्त नहीं पाये।
गुरु सुत को जिलाय, द्वारकापुरी बसाय,
स्वतन्त्रता की मधुर तान, जगत को सुनाये ॥
'ब्रह्म' ब्रह्म के समान सबको बतलाय ज्ञान,
भक्त सब कृतार्थ आज अच्छे दिन आये ॥

अदालतों का ढोंग।

न्याय की रीति को जाने नहीं,
अन्याय करें न्यायाधीश कहावैं ॥१॥
फीस धराय गहैं फरियाद,
विन फीस न काहू की बात उनावैं ॥२॥

झूठी गवाहिन के बल पे,
निरदोषिन के सिर दोष लगावैं ॥३॥
'ब्रह्म' कहें ब्रह्मज्ञान विना,
परपञ्च करैं अरु पञ्च कहावैं ॥४॥

यतीन्द्र ने देदी अपनी जान ॥ स्थायी ॥

रच स्वतन्त्रता कार्य पद्धति, हो गये अन्तर्द्धान ॥
भारत माता बैठी रोवै, कौन करे कल्यान ॥१॥
कारागार कष्ट को सहकर, छोड़े तन से प्रान ।
नवयुवकन में जीवन भरकर, दूर कियो अज्ञान ॥२॥
माता का सच्चा सपूत था, प्रण लिया था मन में ठान ।
सत्याग्रह की समर भूमि में, मार लिया मैदान ॥३॥
आवो वीरो ! करैं देशहित, श्रद्धाञ्जलि दान ।
आज तिथी है उसी यती की, लिया 'ब्रह्म' पहिचान ॥४॥

सवैया ।

प्रेम बहे सब के रग में,
जग में जब न्याय प्रतिष्ठा पावैं

अन्न और वस्त्र मिले सबको,
घर दूध और माखन से भर जावैं
कीर्ति किसान आनन्द करें,
हो स्वतन्त्रध्वजा नभ में फहरावैं
कवि 'ब्रह्म' कहैं तब गौरव है,
जब देश के लोग क्लेश न पावैं

मुल्क छुड़ाने वाले हैं।

मतवाले हैं मत छेड़ो हमें हम द्वन्द मचाने वाले हैं।
इन जालिमों के जुल्मों से यह मुल्क छुड़ाने वाले हैं॥
बाल वृद्ध वनिता युवकों में फैली हैं लहर आजादी की।
सब मिलकर माता के चरणों में बली चढ़ाने वाले हैं॥
यमदूतों से भयभीतों को अब अभय दान मिल जायेगा।
हम राम राज्य के अनुभव सबको शीघ्र कराने वाले हैं॥
दुःशासन का कर अन्त शीघ्र सिंहासन अपना लेवेंगे।
हम किसान और मजदूरों की सब विपद हटाने वाले हैं
विजय-पताका भारत के नभ-मण्डल में फहरावेंगे।
हम 'ब्रह्म' ज्ञान का अनुभव सबको शीघ्र कराने वाले हैं॥

गज़ल

मुल्क हमारा है मालिक वो बन के बैठे हैं।
हमारे दावे को खारिज वह करके बैठे हैं॥
लिखा करते हैं हर खत में ओबीडियन्ट सर्वेन्ट।
बात करते नहीं हैं वह रुख बदल कर बैठे हैं॥
फत्ल करते हैं खुद इन्साफ लेकर बैठे हैं।
हमारी गर्दनों पर तल्वार लेकर बैठे हैं॥

लावनी।

जय जय जय जगदम्बा के
कर कमलों से सन्मान हुये।
स्वतन्त्रता की समर-भूमि में
अधिक वीर बलिदान हुये॥ टेक॥
सिराजुद्दौला मारा गया,
मिरजाफ़र की ग़द्दारी से।
नन्द कुमार फांसी पै चढ़ा,
वारिंग हेस्टिंग की मक्कारी से॥
उसी दुष्ट ने अवध उजाड़ा,
धन छीना पर नारी से।

चेतसिंह को चौपट कर
वह श्वान भगा हुशियारी से ॥
जितने आये सबने खाये,
पर धन से धनवान हुये ॥
स्वतन्त्रता की समर-भूमि में
अधिक वीर बलिदान हुये ॥ १ ॥
मंगल पांडे रण में बढ़ कर,
दुष्टों का संहार किया ।
वीर कुंवरसिंह लड़े अन्त तक
गंगा जी को पार किया ॥
अहमदशाह भी कम न थे,
जिन्हें जगन्नाथने मार दिया ।
राना वेनीमाधव जी ने
माता पर सभी निसार किया ॥
जिन्हें दिया था प्राण-दान
उन से ही वे कुर्बान हुए ।
स्वतन्त्रता की समर-भूमि में
अधिक वीर बलिदान हुए ॥२॥

लक्ष्मीबाई की वीरताई
नव जोवन संचारक है
नाना साहित्र तांतिया का
कार्य बड़ा गुणकारक है ॥
अजनाला के कूपक का कृत,
घृणित हृदय विदारक है।
दुष्ट नील का ताडंव नृत,
भारत का सर्व उजाड़क है ॥
वख्तखान की तेग उठते ही,
शत्रू सब हैरान हुए।
स्वतंत्रता की समर-भूमि में,
अधिक वीर बलिदान हुए ॥ २ ॥
नाजिम उल्ला औ बाला साहिब
बल अपना दिखलाय गये।
बहादुरशाह के चारों सुत
हडसन को खून पिलाय गये ॥
खुदीराम ने बढ़ करके
बम मारा मार्ग दिखाय गये।

भारत माता की लज्जा हित
लाला* जी ने दे दी जान ॥
भगतसिंह बटुकेश्वर दत्त भी,
खेले अपनी आन पर आन ॥
अभिमन्यु सम राजपाल की
शत्रु ने ले डाली जान ।
नव ज्वानन ने करी प्रतिज्ञा
करमें धरकर लाल निशान ॥
पुलिस अधिकारी डन्डा ले ले
मारे ज्यों शैतान हुये ।
स्वतन्त्रता की समर-भूमि में,
अधिक वीर बलिदान हुये ॥६॥
धन धन जीवन है उनका,
जो स्वतन्त्रता अपनाते हैं ।
रन भेरी को बजा बजा कर,
आगे कदम बढाते हैं ॥

---

* लाला लाजपतराय

जिस प्रकार से विजय होय,
वैसे ही ध्येय बनाते हैं।
हिंसा और अहिंसा की उलझन में,
वे नहीं आते हैं॥
ऐसे ही वीरों के बल से,
देश के कुछ कल्यान हुये।
स्वतन्त्रता की समर-भूमि में,
अधिक वीर बलिदान हुये॥७॥
खड़ी स्वतन्त्रता जय-माल ले,
रन में वीर बुलाती है।
जो आवे उसके सन्मुख,
वह उसको पुष्प चढाती है॥
शोणित-तर्पण करै वीर जो,
उसे देख हर्षाती है।
मङ्गल कारी गीत मधुरध्वनि,
विजय हेत वह गाती है॥
ब्रह्म ज्ञान से दीक्षित हो हो,
तान बान अगुवान हुये।

स्वतन्त्रता की समर-भूमि में,
अधिक वीर बलिदान हुये ॥८॥

राष्ट्रिय होली काफी:—

मान अपना न घटाओ, जीवन सफल बनाओ। अन्तरा।
जन्म भूमि परतन्त्र तुम्हारी, उसकी बन्दी छुड़ाओ ॥
लाखों बन्धु बन्दी गृह में हैं, सब की आन बचाओ।
गान्धी को आश्रम बुलाओ ॥ जीवन० ॥१॥
ऋतु वसन्त में होके स्वतन्त्र तुम, प्रजातन्त्र चलाओ।
राष्ट्र पति श्री जवाहर लाल को, ऊंचे सिंहासन बैठाओ।
ध्वजा नभ में फहराओ ॥ जीवन० ॥२॥
तजो विदेशी गहो स्वदेशी, खद्दर को अपनाओ।
सत्याग्रह संग्राम में आकर, सत्य का नाद गुंजाओ ॥
विदेशी वस्त्र जलाओ ॥ जीवन० ॥ ३ ॥
क्रान्ति की पिचकारी भर कर, लाल रंग बरसाओ।
बलि बेदी पर चढ़ो वीरवर, अबिरा गुलाल उड़ाओ ॥
उठो नव जवानो आओ ॥ जीवन० ॥ ४ ॥
भारत की नव-युवती, युवको, किञ्चित ना घबराओ।
विचारानन्द के आशीर्वाद से, पूर्ण स्वराज सुख पाओ ॥
आनन्द से होली मनाओ ॥ जीवन० ॥ ५ ॥

कवित्त

दब कर न रहना न स्वार्थ मे बिताना दिन,
प्रेम एकता का मन्त्र यूं हि फूंक जाना है।
तख्ते लौट देने हैं ये काले कानून भरे।
अपना अधिकार जन्म सिद्ध शीघ्र पाना है॥
बेड़ी परतन्त्रता की तोड़कर स्वतन्त्र होना है,
साम्राज्य वाद के किले को खोद ढाना है।
भारत गुन गाना प्राण बाजि लगाना,
पहिर खादि के जामा को निभाना बीरबाना है

सवैया

सत्य परमारथ न्याय गये पर भाव बढे दुःशासन के।
लुप्त भये यति योगी सती, नहिं सन्त रहे दृढ आशन के॥
अमृत पारस हँस छिपे, परम हंस अधीन है दासन के।
कवि ब्रह्म कहें कलिकाल के मध्य सर्बत्र आतङ्क पिशाचन के॥

कवित्त बसन्त

बन पर्वत औ उद्यान सभी, परफुल्लित हैं सब स्वागत में।
कूर सरोवर औ सरिता सरसाय रहीं ऋतु लागत में॥
नभ स्वच्छ में पक्षी स्वतन्त्र फिरें, परतन्त्र है भारत या गत में।
ऋतु राज बताओ स्वराज बिना, मन कैसे लगे अभ्यागत में॥

आंसू बहाना है मना (गजल)

फंस रहे है अब कफस में लब हिलाना है मना,
भूख से तड़पें मगर आंसू बहाना है मना।

लेगये सारा खजाना लूटकर इंगलैण्ड में,
बच रहा जो कुछ हमें खाना खिलाना है मना॥
जल रहे उनके घरों में झाड़ और फानूस खूब,
हम गरीबों के यहां दीवा जलाना है मना।
भूक का शिकवा अगर हमने कभी उनसे किया,
डांट कर घुड़की मिली कि रोटी खाना है मना।
अन्दलीबों को पकड़ कर बन्द किया खुदगर्ज ने,
दोस्तों के घर भी हमको आना जाना है मना।
'ब्रह्म' ने पैदा किया ब्रह्माण्ड में हमको जनाब,
हक दबाकर कह रहे आंखे उठाना मना है॥

खुदा कसम मैं

सबर से अपने कबर तुम्हारी खुदा रहा हूं खुदा कसम मैं।
किया है तुमने जो जुल्म हमपर सुनारहा हूं खुदा कसम मैं॥
जुबां को करदे तू बन्द जालिम लगा दे मुझपर दफा चवालीस।
मगर हकीकत छिपेगी कैसे लिखा रहा हू खुदा कसम मैं॥
पकड़के बन्द करदिया कफसमें न खबर होने दिया किसीको।
रहम इलाही का अपने तांई बुला रहा हूं खुदा कसम मै॥
खड़ा हूँ नेकी को दिल में लेके भला चाहता सभी बशर का।
असर करूंगा खुदा के दिल पर दिखा रहा हूं खुदा कस मैं॥
लगा के तोपें उड़ा दे चाहे मगर हटूंगा न तिल भी पीछे।
तुम्हारे जुल्मो सितम खुदा को दिखा रहा हूं खुदा कसम मैं॥

———

रह न जायगी

हमारी आहों जारी से यह शाही रह न जायगी।
उसी की गोलियां उस को जहन्नुम भी दिखायंगी॥
लगाते डडेण कोड़े आज जालिम लोग हैं हमपर।
खुदा की मार कल उन को कतल घर में गिरायगी॥
हमारे सब्र के शोले मदद लेकर इलाही की।
करेगी खाक दुश्मन को, इक दम भर में मिटायगी॥
हिला देगी जमीनो आंसमां को अब फुंगा मेरी।
जुबां मेरी खुदा से जब, ये दास्तांयें सुनायेगी॥
अगर हम आज मरते हैं, मगर कल तुम यह देखोगे।
उस जालिम की हस्ती भी यहां पर रह न जायगी॥

वार की

जान ली सारी हकीकत आपके सरकार की।
तारीफ क्यों करते हो झूठी जालिमें बदकार की॥
बद चलन को सर चढ़ा कर नाचते भी आप हैं।
फक्र करते हो उसी पै जो कौम है मक्कार की॥
भूल कर कौमी मुहबत बन गये गद्दार तुम।
खाते हो टुकड़ा हमारा गाते हो उस पार की॥
देख चुके हम तुम्हे पहिचान भी पूरा लिया।
कर दिया सीना अगाड़ी गम नहिं है वार की॥

भजन ।

मोरी बलियां पकड़ के उवारा शिव ॥ टेक ॥

मैं अति कामी, कुमार्ग गामी,
नहि सत कर्म विचारा,
डूब रहा था भव सागर में,
सूझे न वारा पारा ॥ मोरी० ॥
को दयाल शंकर सम जग में,
को शिव सम है प्यारा,
भक्त जनन के तारन कारन,
जटा में गङ्ग धारा ॥ मोरी० ॥
जन्म मरण के रोग जो था सब,
अब मिट गया हमारा,
जब से शिव के शरण में आये,
यम से बाजी मारा ॥ मोरी० ॥
विचारानन्द ने ॐ २ जप,
काल के गाल को फारा,
शंकर के चरणों में लग के,
अपना जन्म सुधारा ॥ मोरी० ॥

भजन ।

राम भजो राम भजो राम भजो प्यारे ॥ टेक ॥
भक्तन के तारण कारण,
मानुष तन्न धारे ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
886
24.12.71
GOVT. OF INDIA

सन्तन को अभय करें,
दुष्टन को संहारे ॥ राम भजो० ॥
शबरी घर बेर खाय,
अहिल्या को तारे ।
महिमा अपरं अपार,
मुनि मन उजियारे ॥ राम भजो० ॥
निराकार शुद्ध ब्रह्म,
माया विस्तारे ।
दशरथ घर जन्म लियो,
देवन दुख टारे ॥ राम भजो ॥
निगमागम वेद,
वादविवाद कर कर हारे ।
ये हैं शिव के सरूप,
विचारानन्द विचारे ॥ राम भजो० ॥

भजन ।

मोहिं राम दरश करवाव,
सखि न्यौछावर देहुँ रे ॥ टेक ॥
शीश मुकुट मकरा कृत कुण्डल,
धनुष बाण हो हाथे ।
राम लखण सीय सहित जो देखुं,
तभि नवाई हूं माथ ॥ सखि० ॥

जनकपुरी में धनुष जो तोड़ा,
उसका रूप दिखाव ।
रावण के मस्तक दश छेदा,
उनके पास पठाव ॥ सखि० ॥
शबरी जूठे फल खाये,
दिये अहिल्या तार ।
उनके चरण शरण मोहिं,
लैचल मैं करिहौं दीदार ॥ सखि० ॥
बिना राम आराम नहिं,
नहीं बिना भजन उद्धार ।
विचारानन्द को भवसागर से,
करदे नय्या पार ॥ सखि० ॥

भजन दादरा ।

नन्दि वाले हमारी दृष्टि आजाओ ॥ टेक ॥
तुम्हारे दरश को नित तरसत हूं ।
भोला सुरतिया दिखा जावो ॥ नन्दि० ॥
माया के बन में भटक रही हूं ।
सुधि डगरिया बताजाओ ॥ नन्दि० ॥
चलती चलती मैं थकित हुई हूं ।
ज्ञान की बूटि पिला जाओ ॥ नन्दि० ॥

विचारानन्द के अन्तः करण में ।
उमा सहित शिव समाय जावे ॥
नन्दि वाले हमारी दृष्टि आजावे ॥

होली काफी

अब मोंही काहे झिकाओ,
दरश जल्दी दिखलाओ ॥ टेक ॥
सब प्रकार प्रतीत होत हो,
दृष्टि में काहे न आओ ।
दोष दास के क्षमा करो प्रभु,
मोंहि ज्ञान के मार्ग बताओ ॥
भरम अन्दर के मिटाओ,
अब मोंहि काहे झिकाओ ।
हटा दो परदा हृदय चित्त के,
नेत्र के दोष मिटाओ ॥
आपन जान दया शिव कीजै,
अब तो प्रगट ह्वै जाओ ।
ज्ञान कि भंग छनाओ,
अब मोंहि काहे झिकाओ ॥
कर त्रिशूल ले हे चन्द्रशेखर,
नन्दि पर चढ़के आओ ।
मुण्डमाल डमरू भुजङ्ग अङ्ग,
सिंगी नाद सुनाओ ॥

आनन्द पथ मोंहि दिखाओ,
अब मोंहि काहे झिकाओ ॥
मात्र ऊमा और बन्धु गणपत से,
मुझ से भेट कराओ ।
विचारानन्द के हे विश्वेश्वर,
सब संकल्प पूराओ ॥
दास अपना अब बनाओ,
अब मोंहि काहे झिकाओ

होली काफी ।

तज के सकल बुराई, करो शंभु सेव काई ॥ टेक ॥
सब लोगन में प्रित प्रकट कर,
सुमत देव फैलाई ।
जो होली सो होली प्यारे,
अब भेंटो गले लगाई ॥
इस से होगी भलाई
तजके सकल बुराई ॥
यह शुभ औसर फिर नहिं पै हो,
काल काल तुझे खाई ।
भेद भाव को त्याग सकल से,
सब में देखू रघुराई ।
करो कुछ देश भलाई,
तजके सकल बुराई ॥

भक्ति के रंग से मन को रंग दो,
ज्ञान गुलाल उड़ाई ।
छोटे बड़े सब एक रंग हो के,
मिल लो भाई भाई ।
करो सब से मित्रताई,
तजके सकल बुराई ॥
काम क्रोध अरु राग द्वेष ये,
शत्रु के समुदाई ।
विचारानन्द तू इन्हे विजय कर,
डंका देउ बजाई ॥
सुमरि शिव शिव मन लाई;
तज के सकल बुराई ॥

होली टपकी ।

होली खेलौं हौं शंभु संग अब की बार ॥ टेक ॥
दया के संग में धर्म के रंग में,
क्षमा के नया पै उतारौं पार ॥
होली खेली हौं० ॥
ज्ञान गुलाल से मुख कर लाल,
सत के भंग छानु बार बार ॥
होली खेली हौं० ॥

तज के लाज जै हौं संत समाज ।
अलख जगै हौं मैं द्वार द्वार ॥
होली खेली हौं० ॥
प्रेम बढै हौं नम्र होय जै हौं,
एक रंग देखि हौं सभी संसार ॥
होली खेली हौं० ॥
ऊंच नीच औ पंडित मूढ से,
सब से मिली हौं भुजा पसार ॥
होली खेली हौं० ॥
कर संतोष भजों आशु तोष,
ध्यान लगै हौं मैं मन को मार ॥
होली खेली हौं० ॥
विचारानन्द भा अब जो नन्द,
ै हौं जन्म अपना सुधार ॥
होली खेली हौं० ॥

॥ होली ॥

बन्सी बज रही बृन्दावन में ॥ टेक ॥

सुनत शब्द सखी उमंग चली हैं ।
श्रीकृष्ण निकट पहुँचि छन में ॥ बन्सी० ॥

दरश करत हरत हिया भितर ।
कृष्ण र सुमिरत मन में ॥ बन्सी० ॥

तथेइ तथेया थेया नाचत कन्हैया दैया।
लाल गुलाल लगो तन में ॥ बन्सी ॥
धन बृन्दाबन धन बृजनारी सब।
धन धन विचारानन्द कृष्ण सरण में ॥ बन्सी ॥

होली काफी

काफल जन्म के पाये उम्र सब यौंहि बिताये ॥ टेक ॥
नहिं सतसंग कियो ज्ञानिन के,
नहिं बिद्या लौ लाये।
खायो मांस पियो मदिरा तुम,
दिन वैश्या संग विताये ॥
वन्श में दाग लगाये ॥ उमर सब० ॥
राग द्वेष औ द्वन्द मचा के,
वन्धु विरोध बढ़ाये।
पर नारी से नेह लगाकर,
दोनों लोक नसाये ॥
महल रौ रौ में बनाये, ॥ उमर सब० ॥
दुष्टन के संग धुम्रपान कर,
बुद्धि भ्रष्ट कर डाये।
छल अरु कपट पखण्ड कियो खूब,
हर के नाम भुलाये ॥
पाप के बृक्ष लगाये ॥ उमर सब० ॥

पर निंदा को सुने कान दे,
ज्ञान से मुंह बिचकाये।
यवनी नृत्य में नित्य चित देकर,
कुल के नाम डुबाये।।
सरम से मुंह ना छिपाये ।। उमर सब० ।।
वेद मार्ग तज चले कुपथ,
पथ धूर्ता से द्रव्य कमाये ।।
कायरता से कलि को दोष दे,
निज पुरुषार्थ गंवाये।
अपने सब ऐब छिपाये ।। उमर सब० ।।
नहिं कछु लाभ लियो आत्मा के,
न जप तप ध्यान लगाये ।
सोय सोय के खोय दिये सब,
काल घेर अब आये ।।
मजा तू कौन उठाये ।। उमर सब० ।।
उत्तम कुल में जन्म लियो तू,
उत्तम तन को पाये ।
रे शठ चेत! विचार हृदय में,
विचारानन्द ये गाये ।।
राम को हिय में पाये ।। उमर सब० ।।

चैती ।

चैत मास योंहि बितौले हो रामा,
शिव ना सुमर ले ।। टेक ।।
गैल बसन्त संत नहिं भेंट ले,
आलस्य में दिनवा बितौले हो रामा ।।
शिव ना सु० ।।
संग के साथि सब तितर बितर भैले,
रौरे कौने गुमनवां भुलौले हो रामा ।।
शिव ना सु० ।।
हाय हाय कर धनवां बटोर ले,
दनवां से मुंह बिचकौले हो रामा ।।
शिव न सु० ।।
बिचारानन्द सब परभ जित गैले,
सुरसरि काहे न नहौले हो रामा ।।
शिव ना सु० ।।

कजली ।

हरि हरि हरि हरि भज प्यारे,
जन्म सुधारो रे हरि ।। टेक ।।
काम क्रोध अरु अहंकार मद,
इन्हें पकड़ के मारो रामा ।।

हरि हरि ज्ञान ध्यान कर
दाया धर्म विचारो रे हरि ॥ हरि २ ॥
फिर २ मनुष जन्म न पैहौं,
युक्ति से वाजि सम्हारो रामा ॥
हरि हरि तप जप योग बैराग से,
राग उखारो रे हरि ॥ हरि हरि० ॥
कर सत संग पियो वेदध्वनि,
सदाचार पर चारो रामा ॥
हरि हरि द्वेष भाव सब त्याग,
आत्म को निहारो रे हरि ॥ हरि हरि० ॥
विचारानन्द के उर अन्दर में,
हरि ने डेरा डारो रामा ॥
हरि हरि छोड़ कपट जञ्जाल भरम
सब टारो रे हरि ॥ हरि हरि० ॥

कजली ।

शिव को भूला हुआ अज्ञानी,
जगत में ठोकर खाता है ॥ टेक ॥
सिगरट बीड़ी पी पी तमाखू
आंत जलाता है ॥ शिव को० ॥
वेश्यागामी नीच कुकर्मी,
द्वेष फैलाता है ॥ शिव को० ॥

लम्पट बाजी कर २ के पाजी,
उत्तम कहाता है ॥ शिव को० ॥
उर अन्दर में लखै न मूरख,
प्रेत मनाता है ॥ शिव को० ॥
नीच कर्म को करे निरन्तर,
और को नीच बताता है ॥ शिव को० ॥
देव नदी सुरसरी को त्याग कर,
कूप नहाता है ॥ शिव को० ॥
पर नारी से नेह लगा के,
धर्म गंवाता है ॥ शिव को० ॥
विचारानन्द कहै इन के संग तज,
झूठों औ कथा सुनाता है ॥ शिवको० ॥

कजली ।

मित्रो भजन करो शंकर के,
जब तक रहै जिगर में दम ॥ टेक ॥
शत रुद्राक्ष को धारण करलो,
ब्रह्मचर्य से रहो हर दम ॥ १ ॥ मित्रो० ॥
दुधा की भस्म लगाओ अंग में,
कपट को कर दो कम ॥ २ ॥ मित्रो० ॥
ध्यान लगा कर सुमरिन कीजे,
बोलो अगड़ बम बम ॥ ३ ॥ मित्रो ॥
विचारानन्द कहे शिव पूजन कर,
कमी न हो कुछ कम ॥ ४ ॥ ॥मित्रो० ॥

कजली ।

भोला बास करैं काशी में,
गौरा पारवती के संग ॥ टेक ॥
मस्तक ऊपर जटा विराजै,
शोभा देहि गङ्ग ॥ भोला० ॥ १ ॥
बाँकी भृकुटी अर्ध चन्द्रमा,
लिपटे अंग भुजङ्ग ॥ भोला० ॥ २ ॥
बाघम्बर पीताम्बर ओढ़ैं,
भस्म लगाये अङ्ग ॥ भोला० ॥ ३ ॥
कर डमरू मुण्डन की माला,
निशि दिन बज रहे चङ्ग ॥ भोला ॥ ४ ॥
विचारानन्द को यह वर दीजे,
भक्ति से जाऊं रङ्ग ॥ भोला ॥ ५ ॥

कजली ।

नारद बीना बजावत आओ,
हमें कछु ज्ञान बता जाओ ॥ टेक ॥
मोह के बन में भटक रहा हूं,
डगर दिखा जाओ ॥ नारद० ॥
जरा मरण के भय से बिकल हूं,
फिकर छुड़ा जाओ ॥ नारद० ॥

गणागण स्वर भेद न जानूँ,
मेरी बद बैठा जाओ ॥ नारद० ॥
विचारानन्द को शिव के शरण,
कैलास में पहुंचाओ ॥
नारद बीना बजावत आओ,
हमें कुछ ज्ञान बता जाओ ॥

कजली ।

भजन कब करि हो रे सांवलिया ॥ टेक ॥
बालेपन में रह्यो अचेत,
ज्वानी बीतगा देत देत ।
अब तो केश भये हैं श्वेत,
कपट कब छोड़ि हो रे सांवलिया ॥ भजन० ॥
सोच्यो शुभ कर्मन कोई,
बेल पापों की तू बोई ।
रहो मोह नींद में सोई
हाय २ कर के मरि हो रे सांवलिया ॥ भजन० ॥
जै हो जब ईश्वर दरबार,
दै हो कौन से इजहार ।
यहां नहीं मुख्त्यार,
फिर रौ रौ में परि हो रे सांवलिया ॥ भजन०

सुनो विचारानन्द की बानी,
बृथा खो दियो जिन्दगानी।
चल गये लाखों अभिमानी,
राम नाम बिन न तरिहों रे सांवलिया ॥ भजन० ॥

जन्माष्टमी।

नन्द घर आनन्द सखी,
आज जन्म अष्टमी।
झुरुक २ आवें सभी,
नन्द जी के द्वार ॥
ठुमुक २ नाचें गावें,
होवें मङ्गलाचार ॥ सखी० ॥
ब्रह्मादिक सुर हरषें,
बरषें बोलें जय २ कार।
वीना लै के नारद शारद,
गावें श्रुति सार ॥ सखि० ॥
भू मण्डल में शोर मचा,
कृष्ण अवतार का।
देव मुनि शंकर जी आये,
दर्शन करन का ॥ सखि० ॥
तीन लोक चौदह भुवन हैं जिसके मोद में।
विचारानन्द खेलें यशोदा की गोद में॥
सखी आज जन्म अष्टमी० ॥

भजन ।

बृज में गोप सखा सङ्ग,
रहस्य करैं बनधारी रे दया ॥ टेक ॥
बाजे तबला और सितार,
सरंगी बीना औ करतार ।
मृदङ्ग संग घुंघर की झंकार,
अधर पर वन्शी धरे ।
बजावे कृष्ण मुरारी रे दया ॥ बृज में० ॥
नगाड़ा बजे ताल के साथ,
पकड़ के ग्वाल बाल के हाथ ।
नाचें थिरिक २ बृज नाथ,
लीला देखन आये बड़े २ ब्रह्मचारी रे दया ॥ बृज में० ॥
जितनी आई वहां बृजनार,
उतने हुए कृष्ण तैयार ।
पहिने सब मोतिन के हार,
मुकुट के चमक दमक से
खिली वहां उजियारी रे दया ॥ बृज में ॥
किया जब कृष्ण प्रेम संचार,
करें सब एक एक को प्यार ।
द्वेष को भूलगये संसार,
चिदानन्द कृष्ण चरण पर,
बार २ बलिहारी रे दया ॥ बृज में० ॥

भजन ।

आलस्य तज उठ वीर कमर कस,
काल तेरे सन्मुख ललकारे ॥ टेक ॥
दान दे सैन एकत्रित करले,
सुर सरी सकल विपत को टारे ॥ आलस्य० ॥
सत के धनुष शान्त बाण ले,
काम क्रोध शत्रु तेरे हारे ॥ आलस्य० ॥
राम सुमिरले राम सुमिरले,
राम बिना अब कौन उबारे ॥ आलस्य० ॥
बिचारानन्द भजन कर हरि के,
हरि के नाम भव सागर तारे ॥ आलस्य ॥

भजन ।

भेद मत हरि हर में तू मान ॥ टेक ॥
छोड़ मूर्ख के संग पक्ष सब त्याग,
तजो अभिमान ॥
जो संशय कुछ होय हृदय में,
सुन ले सांचा ज्ञान ॥ भेद मत० ॥
जावत जीव चलत अरु बोलत,
सब में शिव पर ध्यान ॥
शिव के तजे अमंगल जानो,
मानो शव के समान ॥ भेद मत० ॥

विष्णु व्यापक है जल, थल नभ,
जिन के तेज महान ॥
जा के हृदय में अन्धकार है,
द्वेष करत बेमान ॥ भेद मत० ॥
विचारानन्द उर कर विचार ले,
सत्य ब्रह्म पहिचान ॥
सकल चराचर एक रूप है,
कहते सन्त सुजान ॥ भेद मत० ॥

भजन ।

मैं गोरी मोर क्यों सांवरो रंग ॥ टेक ॥
तृष्णा ननदिया बड़ि कलकलहि,
काम क्रोध देवरा से रहुँ तंग ॥ मैं गोरी० ॥
लोभिन सवतिया मिलन न देवें,
माया के बन में करें दङ्ग ॥ मैं गोरी० ॥
मोर पिया मोको कबहु न भूलैं,
कुटनी भुला के मिलावे दुसर संग ॥ मैं गोरी० ॥
सांचे पिया मिलि हैं जो परमेश्वर,
छुई के चरण लै लै हो सफल दङ्ग ॥ मैं गोरी० ॥

भजन ।

कब भजि हो हरिनाम प्यारे, कब भजि हो हरि नाम ॥

लेत देत सब समय बितायो,
भरमत फिर्यो तमाम ।
हाय हाय कर सम्पति जोर्यो,
ले के न जाई हो छदाम ॥ प्यारे० ॥

काल तुम्हारे सन्मुख ठाडे,
सुमरि ले सीताराम ।
मातु पिता बन्धु सुत दारा,
कोऊ न आइ हैं काम ॥ प्यारे० ॥

जा तन पर तू मगन भयो है,
इसमें हाड़ अरु चाम ।
प्राण पखेरू निकल जांयगे,
सूना करके धाम ॥ प्यारे० ॥

विचारानन्द सब त्याग प्रपंच को,
भटको मत ग्राम ग्राम ।
हर अन्दर में ध्यान करो तो,
मिलेंगे राधाश्याम ॥ प्यारे कब भजिहो० ॥

भजन ।

क्या तुम गाते हो वन्शी में, क्या तुम गाते हो ॥ टेक ॥
ये वांस की वन्सी में गुण नाहीं,
तुम गुणी कहाते हो ॥
क्यों यदुनन्दन जादू कर कर,
हमें सताते हो ॥ वन्शी में० ॥
जब हम सुतैं लाली पलङ्ग पर,
तभी बजाते हो ।
सुन सुन जिय को चैन न
ऐसी प्रेम चलाते हो ॥ वन्शी में० ॥
मात पिता पति पुत्र सबों से,
प्रीति छुड़ाते हो ।
बला के बन में शरम मिटा के,
नाच नचाते हो ॥ वन्शी में० ॥
बिचारानन्द दरशन के प्यासे को
तरसाते हो ॥
बड़े खिलाड़ी हो गिरधारी,
विपत भक्तों की हटाते हो ॥ वन्शी में० ॥

———

यदि

आप

शुद्ध, सुन्दर और उत्तम

छपाई

हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू में

चाहते हैं तो

अभय प्रेस

देहरादून

में

तशरीफ लाइये ।

321/98